DETAILS EXPLANATIONS

Paper Code : RPSCEE30 | : RPSCCE30 | RPSCME30

[अनुभाग-अ]

1. **(क)** (i) सदैव (ii) पर्यावरण
(ख) (i) पर + उपकार (ii) नर + ईश

2. **(क)** (i) प्रतिक्षण (ii) अनुकृति
(ख) (i) शक्ति के साथ (ii) लाभ के लिए

3. **(क)** (i) उद्‌घाटन (ii) उपवास
(ख) (i) अभि (ii) आ

4. **(क)** (i) कठिन (ii) मार्मिक
(ख) (i) आ (ii) नी

5. **(क)** (i) अनोखा (ii) छल
(ख) (i) निर्जीव (ii) अक्षम

6. (i) धूपबत्ती – स्थान (ii) बुराई – भलाई

7. (i) अधिकृत (ii) अनुभूत
(iii) अनंतर (iv) स्त्रैण

8. (i) धातु (ii) नींबू
(iii) दृष्टि (iv) नीरव

9. (i) उसके दर्द हो रहा है।
(ii) बेटी पराए घर का धन होती है।
(iii) अभी कितने बजे हैं?
(iv) उसके प्राण निकल गए।

10. (i) **अर्थ** : जिद पर अड़ जाना।
वाक्य में प्रयोग : दिनेश अब अकड गया है, इतनी आसानी से अब वह नहीं मानेगा।

(ii) **अर्थ** : चापलूसी करना।
वाक्य में प्रयोग : खुशामदी क्लर्क सदा अफसरों के आगें पीछे घूमते फिरते हैं।

(iii) **अर्थ** : पश्चाताप करना।
वाक्य में प्रयोग : मैं कान कपड़ता हूँ कि मैं फिर कभी झूठ नहीं बौलूँगा।

(iv) **अर्थ** : सावधार कर देना।
वाक्य में प्रयोग : सच्चाई बताकर तुमने मेरी आँखे खोल दी।

(v) **अर्थ** : विवेकपूर्वक काम न करना।

वाक्य में प्रयोग : उसने इस बार भी अक्ल से काम न लिया तो बडी मुश्किल हो जाएगी।

(vi) **अर्थ** : हानि पहुँचाने का यत्न करना।

वाक्य में प्रयोग : जो दूसरों के रास्ते में काँटे बिछाते हैं, वे स्वयं दुःख उठाते है।

(vii) **अर्थ** : चुपचाप खिसक जाना।

वाक्य में प्रयोग : सुभम मेरा पेन लेकर चम्पत हो गया।

(viii) **अर्थ** : बुरी तरह हारना।

वाक्य में प्रयोग : क्रिकेट मैच में भारत के विरूद्ध पाकिस्तानियों के छक्के छूट गये।

11. (i) **अर्थ** : सच झूँठ का ठीक निर्णय।

वाक्य में प्रयोग : महाराज को अपराधी घोषित करके राजेश ने दूध का दूध, पानी का पानी कर दिया।

(ii) **अर्थ** : अभाव में साधारण कार्य स्वीकार कर लेना।

वाक्य में प्रयोग : अगर क्लर्क की नौकरी मिल रही है तो वह कर लो कुछ तो सहारा मिलेगा। बेकार से बेगार भली।

(iii) **अर्थ** : डण्डे से सब भयभीत होते हैं।

वाक्य में प्रयोग : अपराधी ने जब सीधी तरह से कुछ भी न बताया तो पुलिस ने उसकी पिटाई कर दी और परिणामतः उसने सब कुछ उगल दिया। सच ही तो है कि लकडी के बल पर बन्दर नाचे।

(iv) **अर्थ** : दुविधा में पड़ना।

वाक्य में प्रयोग : बदमाशों के अत्याचार सहना भी मुश्किल और पुलिस में शिकायत करने से भी समस्या हल नहीं होगी क्योंकि वे बाद में बदला लेंगे। यह तो साँप–छछूँदर की जैसी गति है।

(v) **अर्थ** : न पढ़ने योग्य लिखावट।

वाक्य में प्रयोग : उसकी लिखावट को कौन पढ़ सकता है? वह खुद सही पढ़ ले वही बहुत है। सचमुच लिखावट ऐसी है कि लिखे ईसा, पढ़े मूसा।

(vi) **अर्थ** : मन की पवित्रता ही महत्वपूर्ण है।

वाक्य में प्रयोग : सारे तीर्थों की यात्रा करने और मंदिरों में दर्शन करने से भी क्या लाभ यदि मन में दुर्भाव भरे हुए हैं, और यदि मन चंगा है तो कटौती में गंगा है।

(vii) **अर्थ** : अपनी अयोग्यता के लिए साधनों को दोष देना।

वाक्य में प्रयोग : चित्रकार को चित्र तो बनाना आता नहीं और कहता है कि ब्रश ही अच्छा नहीं था, नाच न जाने, आँगन टेंढ़ा।

(viii) **अर्थ** : अज्ञानी एवं अनुभवहीन खतरनाक होता है।

वाक्य में प्रयोग : किसी यो ही नए मिस्त्री से मकान मत बनवा लेना, किसी अनुभवी इंजीनियर की राय जरूर लेते रहता क्योंकि नीम हकीम खतेर जान।

12. (i) छुड़ाना/घटीयाँ होने से बचाना। (ii) देना

(iii) कमी (iv) समझौता

(v) संक्रमण (vi) अदत्त

(vii) मिलाना (viii) अंत में जोड़ना

[अनुभाग-ब]

13. (i) लौह पुरुष सरदार पटेल।

(ii) सरदार वल्लभ भाई का जन्म 31 अक्टुम्बर, 1875 को एक कृषक परिवार में गुजरात के बोरसद तालुके के करमसद ग्राम में श्री झवेर भाई के घर हुआ था।

(iii) सरदार वल्लभ भाई को अपने पिता से विरासत में स्वाभिमान और देशभक्ति मिली।

(iv) स्वतंत्रता।

14. (i) दुख सबको माँजता है।

साधारण व्यक्ति जीवन में दुःख की छाया मात्र से घबरा उठता है और उसे जीवन का अभिशाप मानता है, किन्तु वह नहीं जानता कि दुःख जीवन के लिए बवरदान भी सिद्ध होता है। जिस प्रकार माँजने की प्रक्रिया से बर्तन आदि की तमाम कलौस एवं मलिनता दूर हो जाती है और उसका स्वरूप निखर उठता है, उसी प्रकार दुःख व्यक्ति के हृदय में छिपी तमाम कालिमा और गन्दगी को दूर करके डालता है दुःख की अग्नि में तप तपकर उसका स्वर्ण कुन्दन हो उठता है। और एक अपूर्व दीप्ति एवं निर्मलता से जगमगा उठता है। वह व्यक्ति की सीख देता है कि वह दूसरे व्यक्तियों के दुःख का कारण न बने और सभी को दुःखों से मुक्त रखें।

(ii) वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

उसी मनुष्यता के जन्म की कोई सार्थकता हो सकती है, जो मनुष्य जाति को सुखी बनाने के लिए प्रयत्नशील है, जो मनुष्य, मनुष्य के लिए किसी प्रकार का त्याग नहीं कर सकता, आवश्यकता पडने पर उसकी मदद नहीं कर सकता, उसके दुःख सुख में सम्मिलित नहीं हो सकता, उसके दुःख सुख में सम्मिलित नहीं हो सकता, उसके मनुष्य होने में ही कमी है, जो मानव की अपेक्षा कर किसी ईश्वर की उपासना–आराधाना करते हैं, वे बहुत बड़े भ्रम में हैं कि उनकी आराधना ईश्वर तक पहुँच रही है। ईश्वरत्व मानव में ही प्रतिष्ठित है। मानव की सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है, उसके प्रति प्यार ही ईश्वर के प्रति प्यार है। किसी मानवेतर ईश्वर में विश्वास, मानव के महत्व को, उसकी गरिमा को कम करता है। वस्तुतः मानव की उपेक्षा ईश्वर की उपेक्षा है।

17. हम यह स्वीकार करते है कि आज देश में अनेक प्रकार की बुराइयाँ है। भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, अनाचार का चारों ओर बोलबाला है और गंदे दलदल में साधारण जन ही नहीं, अपितु बड़े से बड़े उत्तरदायित्व पूर्ण शासन अधिकारी तक फँसे हुए हैं। इन दुर्गुणों का अंत करना आवश्यक है। किन्तु हम अपने छात्रों और नवयुवकों से निवेदन करना चाहते हैं कि यह कार्य विध्वंसात्मक कार्यों से नहीं, अपितु रचनात्मक योग्यताओं से ही पूर्ण हो पाएगा। बात यह है कि जहाँ तक भी संभव हो सके, छात्रों को राजनीति आदि के कुचक्र में फँसकर अपनी शिक्षा में बाधा नहीं डालनी चाहिए।

○○○

ENGINEERS ACADEMY